आफरी ने मनाया 66वाँ वन महोत्सव

वृक्ष धरा के आभूषण है तथा इनके बिना धरती एवं मानव जीवन का अस्तित्व संभव नहीं है, यह उद्गार मुख्य वन संरक्षक (वन्य जीव) डॉ. जी. एस. भारद्वाज भा.व.से., ने 7 अगस्त 2015 को, शुष्क वन अनुसंधान सस्थान (आफरी) के वृक्ष उद्यान (आरबोरेटेम) में 66वें वन महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में व्यक्त किये। डॉ. भारद्वाज ने वनों के प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष लाभ की चर्चा करते हुए उनसे नवीन प्रजातियों के आगमन के बारे में बताया। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन में आफरी निदेशक श्री एन. के. वासु भा.व.से., ने वृक्षों को लगाने के साथ-साथ उनके संरक्षण की आवश्यकता बताते हुए सम्पूर्ण पारिस्थतिकी तंत्र को स्वच्छ बनाने की जरूरत बताई जिससे आने वाली पीढ़ी के लिए एक उचित एवं स्वच्छ वातावरण का निर्माण किया जा सके। उन्होंने बताया कि, हर पादप एवं जन्तु का पारिस्थतिकी में अपना-अपना महत्व है तथा इनके बीच उचित सामजंस्य एवं तालमेल से ही पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है।

कार्यक्रम में आफरी के समूह समन्वयक (शोध) श्री बी. आर. भादू भा.व.से., ने खेजड़ली में खेजड़ी की रक्षार्थ हुए अमृता देवी एवं 363 लोगों के बलिदान की चर्चा करते हुए एक व्यक्ति को अपने-अपने ढंग से पर्यावरण एवं वनों की रक्षा करने का आव्हान किया। इस अवसर पर मंडल वन अधिकारी आर. के. सिंह, आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह एवं डॉ. रंजना आर्या ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आफरी के कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी भा.व.से., ने वन महोत्सव की महत्ता बताते हुए हर व्यक्ति को पौधे लगाने एवं उनका संरक्षण करने की अपील की। कार्यक्रम में आफरी के वृक्ष उद्यान (आरबोरेटेम) परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधो का रोपण किया गया ।

वन महोत्सव कार्यक्रम की झलकियाँ

वन महोत्सव कार्यक्रम का स्थानीय समाचार पत्रों में विवरण

आफरी ने धूमधाम से मनाया
66वां वन महोत्सव

आफरी ने मनाया 66वाँ वन महोत्सव

निजी संवाददाता

हर पौधे का पारिस्थितिकी में अपना महत्वः वासु

आफरी में मनाया 66वां वन महोत्सव, मेहमानों ने कई प्रजातियों के पौधे भी लगाए

आफरी ने मनाया 66वाँ वन महोत्सव

आफरी ने मनाया 66वां वन महोत्सव

आफरी ने मनाया 66वाँ वन महोत्सव